Lecture - 17

आधुनिकता, आधुनिक काल की प्रवृत्तियाँ

17-04-2020

डॉ० अनिरुद्ध सिंह
हिन्दी विभाग

स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा प्रथम वर्ष
हिन्दी साहित्य का इतिहास

आधुनिकता -

जब पशिचिमी संस्कृति और भारतीय संस्कृति में टकराहट उत्पन्न हुई तब आधुनिकता ~~को माना गया है~~। उत्पन्न हुई। लेकिन इस तरह की टकराहट मध्यकाल में भी दिखायी देती है जहाँ पर इस्लामी संस्कृति और भारतीय संस्कृति की भी टकराहट हुई पर यहाँ पर किसी भी प्रकार की आधुनिकता नहीं आई क्योंकि इस्लाम संस्कृति को धर्म ने पूरी तरह से जकड़ रखा था इसलिए समाज में किसी भी तरह का कोई बदलाव नहीं दिखाई देता है।

1- मध्यकाल ईश्वर केन्द्रित जीवन दर्शन से संचालित है। आधुनिक काल ईश्वर की जगह मनुष्य और आस्था की जगह तर्क को स्थापित करता है। यही आधुनिकता का पहला अभिलक्षण है। आधुनिक युग अवतारवाद और लीलावाद के विश्वास को भी अस्वीकार कर देता है। मैथिलीशरण गुप्त की एक पंक्ति है - 'संदेश यहाँ पर नहीं स्वर्ग का लाया।
धरती को ही स्वर्ग बनाने आया।।'

मनुष्य के जीवन की वैयक्तिक अथवा सामाजिक सार्थकता इस बात में है कि वे धरती को स्वर्ग बना दें। इसलिए मोक्ष और मुक्ति की अवधारना आधुनिक भावबोध में निरर्थक हो जाती है।

2- आधुनिक भावबोध को संभव बनाने वाले तीन विचारकों की भूमिका निर्णायक मानी जाती है - डार्विन, मार्क्स और फ्रायड। इन तीनों के चिंतन ने ईश्वर, धर्म और दर्शन की भूमिका को निष्प्रभावी कर दिया।---

'द ओरीजन ऑफ एसपाइसिज' डार्विन की किताब है। उसमें बहुत सारी स्थापनाएँ हैं, लेकिन मूल स्थापना यह है कि - 'सृष्टि का निर्माण किसी एक घटना, एक व्यक्ति या एक सत्ता से जुड़ा हुआ नहीं है।' समूची सृष्टि ~~का निर्माण~~ विकास का परिणाम है और अमीबा से भी पहले से शुरू करता है जहाँ धर्म का अस्तित्व नहीं है।

दूसरा सिद्धांत 'सर्वाइवल ऑफ द फिटस्ट दिया' - 'जो समर्थ है, परिवर्तन की प्रक्रिया में वही बचा रह सकता है।' इसलिए पाप और पुण्य, ईश्वर और नैतिकता ये सभी शब्द खत्म हो गए है उसने कहा कि जीवित रहने के लिए जो शक्तिशाली है वह कमजोर को मार डालेगा। इसे 'मत्स्य न्याय' हमारे यहाँ कहा गया है।

· मार्क्स को वस्तुवादी चिंतक कहा जाता है। मार्क्स ने कहा कि मनुष्य के जीवन को वैयक्तिक और सामाजिक स्तर पर उसकी आर्थिक, राजनीतिक व्यवस्थाओं से व्याख्यायित किया जा सकता है। इसलिए मनुष्य की परिस्थितियों की जवाबदेही आर्थिक सामाजिक व्यवस्था पर है तथा इसमें कोई और दूसरे तत्व शामिल नहीं है। उसने कहा कि इतिहास में दो ही तत्व हमेशा से मौजूद रहे हैं एक शोषक और एक शोषित।

इन दोनों में संघर्ष रहता है यह संघर्ष ही इतिहास की गति और दिशा को निर्धारित करता है। इसलिए कम्युनिस्ट मैनिफैस्टो में जो बात लिखी वह काफी चर्चित हुई कि मानव सभ्यता का इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास है। इसलिए आर्थिक समानता को उसने मनुष्य के मोक्ष के रूप में देखा और इस आर्थिक समानता वाली दशा को उसने साम्यवाद कहा क्योंकि सोशलिज्म-कम्युनिज्म की पृष्ठभूमि है।

· तीसरे फ्रायड है। मार्क्स ने मनुष्य की बाहरी संरचना में समझने की कोशिश की और फ्रायड ने उसे नितांत आंतरिक संरचना में। पेशे से साइकैट्रिस्ट होने के नाते

उसने अपने सभी प्रयोग मनोरोगियों पर किए और प्रयोगों के बाद उसने निष्कर्ष निकाले कि आदमी के मन में तीन परतें होती हैं। कौंसियस (चेतन), सब-कौंसियस (उपचेतन) और अनकौंसियस (अवचेतन)। उन्होंने यह सिद्ध किया कि आदमी का जो अवचेतन है वह कुंठाओं से भरा हुआ है। इसलिए अवचेतन ही मनुष्य के जीवन को संचालित करता है। इसलिए मनुष्य के जीवन को धर्म नहीं, अर्थ नहीं, राजनीति नहीं, बल्कि अवचेतन उसका संचालन करता है। वह अवचेतन अनेक प्रकार की कुंठाओं से भरा हुआ है और उसमें सबसे महत्त्वपूर्ण कुंठा है सैक्स।

- अंतिम धक्का नित्से के इस कथन से लगा कि 'ईश्वर मर गया है।'

यह वह ~~प्रणाली है~~ पृष्ठभूमि थी जिसने आधुनिक भावबोध की चेतना और तर्क प्रणाली को एक ठोस आधार दिया है। इस आधुनिक भाव बोध का विश्वव्यापी प्रसारी हुआ। धीरे-धीरे और इस आधुनिक भाव-बोध की शुरुआत सामाजिक चिंतन में और साहित्य में 19 वीं शताब्दी में होती है।

आधुनिक भावबोध की संगठित अभिव्यक्ति नवजागरण के माध्यम से हुई -

दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि विश्व चिंतन के माध्यम से जो आधुनिक स्थापनायें अस्तित्व में आई उनकी पहली अभिव्यक्ति 19 वीं शताब्दी में नवजागरण के माध्यम से हुई। इसलिए भारतीय आधुनिकता को नवजागरण की चेतना अभिव्यक्ति देती है। जो पूरा आधुनिक भाव बोध है, आधुनिक विचारधारा है वे नवजागरण के माध्यम से व्यक्त हुई है।

नवजागरण परम्परा और संस्कृति को वैज्ञानिक तर्क विधान और सामाजिक राजनीतिक अभिप्रायों से जोड़ने वाली चेतना है। शायद यही कारण है कि नवजागरण में एक भी ऐसा चिंतक नहीं है जो अवतारवाद और मूर्ति पूजा का समर्थन करता हो। दयानन्द सरस्वती ने जब वेदों की व्याख्या की तो उस पर वैज्ञानिक तर्कवाद का निर्णायक प्रभाव दिखाई देता है।

चिंतक राजा राम मोहन राय माने जाते हैं। ब्रह्म समाज की स्थापना के द्वारा उन्होंने सामाजिक हस्तक्षेप किया। सती प्रथा पर प्रतिबंध लगवाया। इसलिए नवजागरण की जो मूल चिंता है वह धार्मिक नहीं है। नवजागरण की मूल चिंता सामाजिक है और यह सामाजिकता अमूर्त नहीं है। इस सामाजिकता को परम्परा, स्त्री पुरुष संबंधों, वर्ण व्यवस्था इत्यादि में देखा जा सकता है।

पश्चिमी चिंतकों की धारणा है कि नवजागरण की चेतना का सूत्रपात सीधे- सीधे पश्चिम के प्रभाव का परिणाम है। क्योंकि पश्चिम का ज्ञान- विज्ञान उसके चिंतन उसकी तर्क प्रणाली से जब हिन्दुस्तान के लोग अवगत हुए तो इन्होंने अंधविश्वास, जड़ता और यथास्थितिवाद में डूबे हुए समाज को बाहर निकालने की कोशिश की, रोशनी देने की कोशिश की। लेकिन भारतीय चिंतकों की यह मान्यता है कि नवजागरण वस्तुतः पश्चिम और पूर्व की टकराहट का परिणाम था और ज्ञान और विवेक के नये आलोक में अपने सांस्कृतिक और जातीय अस्मिता की व्याख्या थी नवजागरण की चेतना। इसलिए नवजागरण वस्तुतः दो तरह की संस्कृतियों की टकराव का परिणाम था।

नवजागरण की प्रक्रिया के तीन क्षेत्र तो बहुत स्पष्ट है ① <u>बंगाल का नवजागरण</u> ② <u>महाराष्ट्र का नवजागरण</u> ③ हिन्दी क्षेत्र का। हिन्दी क्षेत्र का जो नवजागरण है उस नवजागरण में जातीय अस्मिता (पहचान) के साथ -साथ इतिहास की पुनर्व्याख्या का प्रश्न भी बहुत महत्वपूर्ण है। इसलिए तीन बातें साफ तौर पर

Scanned with CamScanner